लोकोत्तर वह स्थिति है, जिसमें भक्त श्रीकृष्ण से इस रूप में एक हो जाता है कि श्रीकृष्ण भक्त के प्राणाराध्य सर्वस्व बन जाते हैं और वह पूर्णतया कृष्णप्रेमाविष्ट हो जाता है। उस अवस्था में भगवान् और उनके भक्त में एक अंतरंग प्रेममय रस-सम्बन्ध रहता है और जीवात्मा को अपने अमृत-स्वरूप की प्राप्ति होती है। श्रीकृष्ण भक्त की दृष्टि से कभी ओझल नहीं होते। श्रीकृष्ण से सायुज्य को प्राप्त होना तो आत्मविनाश होगा। भक्त ऐसी भूल कभी नहीं करता। 'ब्रह्मसंहिता' में कहा है :

प्रेमाञ्जनच्छुरित भक्ति विलोचनेन सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्यगुणस्वरूपं गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

'मैं आदिपुरुष भगवान् गोविन्द का भजन करता हूँ, भक्त जिनका दर्शन प्रेमरूपी अञ्जन से विच्छुरित नेत्रों के द्वारा निरन्तर किया करते हैं। भक्तों के हृदय में अपने श्यामसुन्दर रूप में वे नित्य दर्शनीय हैं।' (ब्रह्मसंहिता ५.३८)

इस प्रेमावस्था में श्रीकृष्ण भक्तों की दृष्टि से कभी तिरोहित नहीं होते, भक्तों को उनका दर्शन नित्य प्राप्त रहता है। हृदय में विराजमान परमात्मा विष्णु के रूप में उनका दर्शन करने वाले योगी के विषय में भी यही सत्य है। वह यथासमय शुद्धभक्त बन जाता है और क्षणमात्र के लिए भी अन्तर्यामी प्रभु का दर्शन किये बिना नहीं रह सकता।

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते।।३१।।

सर्वभूतस्थितम्=प्राणीमात्र के हृदय में स्थित; **यः**=जो; **माम्**=मेरी; **भजति**=भक्तिभावपूर्वक सेवा करता है; **एकत्वम्**=एकत्व में; **आस्थितः**=स्थित; **सर्वथा**=सब प्रकार से; **वर्तमानः**=स्थित हुआ; **अपि**=भी; **सः**=वह; **योगी**=योगी; **मयि**=मुझ में; **वर्तते**=निवास करता है।

अनुवाद

जो योगी मुझे और सब प्राणियों के अन्तर्यामी परमात्मा विष्णु को एक समझकर मेरा भजन करता है, वह सदा-सर्वदा मुझमें ही निवास करता है।।३१।।

तात्पर्य

परमात्मा के ध्यान के परायण योगी अपने हृदय में श्रीकृष्ण के अंश, शंख, चक्र, गदा एवं पद्म धारी चतुर्भुज विष्णु का दर्शन करता है। योगी को जानना चाहिए कि विष्णु श्रीकृष्ण से भिन्न नहीं हैं। परमात्मा विष्णु के रूप में श्रीकृष्ण ही प्राणीमात्र के हृदय में विराज रहे हैं। इससे अधिक, असंख्य जीवों के हृदयों में स्थित परमात्मा विष्णु के रूपों में भेद नहीं है। अतएव भक्तियोग में निमग्न कृष्णभावनाभावित भक्त और परमात्मा विष्णु का ध्यान करने वाले पूर्णयोगी में कोई भेद नहीं है। संसार में विविध क्रियाओं में संलग्न रहने पर भी कृष्णभावनाभावित योगी नित्य श्रीकृष्ण में स्थित रहता है। श्रील रूप गोस्वामिचरण के 'भक्तिरसामृतसिन्धु' में इसकी सम्पुष्टि है :